ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

जीवन में आया उजाला
(पृष्ठ – 02)

उर्मिला देवी को मिला
सतत् जीविकोपार्जन योजना का सहारा
(पृष्ठ – 03)

बकरी शेड से
बकरी पालन को मिला बढ़ावा
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अप्रैल 2024 ।। अंक – 33

सतत् जीविकोपार्जन योजना शहरी कार्यक्रम अंतर्गत
मॉडल पालनाघर (क्रेच) की शुरूआत

बिहार में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य समुदायों के लक्षित अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत वित्तीय वर्ष 2018–19 में की गयी। योजना अन्तर्गत जीविकोपार्जन संवर्धन, क्षमता वर्द्धन एवं वित्तीय सहायता तथा अभिसरण आदि के माध्यम से अत्यंत निर्धन परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में योजना की सफलता को देखते हुये राज्य सरकार द्वारा सम्पूर्ण राज्य (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों) मे क्रियान्वयन करने की स्वीकृति दिनांक 01.12.2022 को दी गई है। इस योजना के अंतर्गत जीविकोपार्जन सूक्ष्म योजना के आधार पर सामुदायिक संगठनों द्वारा लक्षित परिवारों को एकीकृत परिसंपत्ति के सृजन हेतु 2,00,000/– रूपए तक प्रति परिवार निवेश में सहयोग किया जाता है। आय की विभिन्न गतिविधियों हेतु लक्षित परिवारों को सूक्ष्म व्यवसाय, गव्य, बकरी एवं मुर्गी पालन, कृषि संबंधित गतिविधि एवं स्थानीय तौर पर उनकी अभिरुचि एवं क्षमता के अनुरूप जीविकोपार्जन गतिविधियों के विकास में सहयोग प्रदान किया जाएगा।

योजना का क्रियान्वयन जीविका के माध्यम से किया जा रहा है जिसमें मद्य–निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग तथा नगर विकास एवं आवास विभाग, बिहार सरकार का भी सहयोग मिल रहा है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना शहरी कार्यक्रम के क्रियान्वयन में गरीब कामकाजी महिलाओं के बच्चों की देखभाल की आवश्यकता महसूस की गयी। नवजात बच्चों की देखभाल के अभाव में कई महिलाओं को काम करने में मुश्किल स्थिति को सामना करना पड़ता है। इस कारण बहुत सी महिलाएँ अपनी जीविकोपार्जन गतिविधियों को संचालित नही कर पाती हैं। इसके कारण लैंगिक असमानता बढती है और गरीबी के चक्र को महिलाएँ तोड़ नहीं पाती हैं।

इस आवश्यकता को देखते हुए सतत् जीविकोपार्जन योजना शहरी कार्यक्रम के अंतर्गत, ब्राक इंटरनेशनल, पी.सी.आई इंडिया और मोबाइल क्रेच के सहयोग से, पटना और गया में मॉडल पालनाघर (क्रेच) स्थापित करने का महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। ये पालनाघर (क्रेच) बच्चों के लिए सुरक्षित स्थान के रूप में काम करते हैं, जब उनके माता–पिता काम करने गए होते हैं।

मोबाइल क्रेच के सहयोग से संचालित, प्रत्येक मॉडल पालनाघर (क्रेच), 6 महीने से 3 वर्ष के बच्चों के लिए सेवा प्रदान करता है। साथ ही, पालनाघर में स्वच्छता के उच्च मानकों का पालन करते हुए पौष्टिक भोजन, नियमित स्वास्थ्य जांच और स्वच्छता की सेवा प्रदान की जाती है।

पालनाघर को सुचारू रूप से चलाने, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए, एक माता–पिता समिति की स्थापना की गई है जो पालनाघर (क्रेच) के कार्य की निगरानी करते हैं। यह समिति फीडबैक प्रदान करने, समस्याओं का समाधान करने और पालनाघरों (क्रेच) के निगरानी (मॉनिटरिंग) करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ये मॉडल पालनाघर (क्रेच) न केवल कामकाजी महिलाओं को आसानी से कार्य करने में सहायक है, बल्कि अन्य सरकारी विभागों और हितधारकों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना शहरी कार्यक्रम के तहत मॉडल पालनाघर (क्रेच) की स्थापना जीविका के कार्यों में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो शहर के अत्यंत गरीब परिवारों की सामाजिक–आर्थिक अग्रसर बनाने का प्रयास करता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बदली जिन्दगी

अफसाना अहमद, जमुई जिला के जमुई सदर प्रखंड अंतर्गत अमरथ गाँव के निवासी हैं। अफसाना अहमद निकाह के बाद अपने ससुराल आई थी, उस समय उनके पति स्वस्थ थे। परिवार ठीक से चल रहा था। अफसाना अहमद की जिन्दगी ठीक–ठाक चल रही थी। इसी बीच निकाह के डेढ़ साल बाद उन्हें एक लड़की हुई। परिवार में खुशी का माहौल था। निकाह के चार साल बाद अफसाना ने पुन: एक और बेटी को जन्म दी। घर गृहस्थी सही तरीके से चल रहा था।

कुछ दिनों के बाद अफसाना के पति की तबियत खराब रहने लगी। कमाई का जरिया बंद होने लगा। घर–परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने लगी। वर्ष 2010 में दीदी के पति का इंतकाल हो गया। जिसके बाद दीदी पूरी तरह से टूट गई। पति के गुजर जाने के बाद ससुराल में दो बच्चों का पालन–पोषण करना उनके लिए आसान नहीं था। ससुराल वाले भी सहयोग करना बंद कर दिए। अन्तत: परेशान होकर में दीदी अपने दोनों बच्चों के साथ अपने मायके चली आई।

इसी बीच वर्ष 2021 में इनके गाँव में सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत हुई तो ग्राम संगठन के माध्यम से इन्हें चिह्नित कर योजना से जोड़ा गया। सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत इनको ग्राम संगठन के माध्यम से रोजगार करने हेतु उत्पादक सम्पत्ति प्रदान की गयी। अफसाना अहमद ने पहले अपने पिता के घर पर एक कमरे में श्रृंगार दुकान की शुरूआत की। फिर धीरे–धीरे उसी दुकान में पूँजी बढ़ाते हुए बच्चों के लिए रेडीमेड कपड़ा भी रखने लगी, साथ हीं दीदी सिलाई का भी काम करने लगी। कुछ दिन बाद दीदी ने ब्यूटिशियन का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण उपरांत घर पर ही पार्लर भी खोल लिया। अफसाना की जिन्दगी में धीरे–धीरे बदलाव की बयार बहने लगी। वह बच्चों को अच्छी शिक्षा हेतु विद्यालय भी भेजने लगी। वर्तमान में उनके दोनों बच्चे अभी आठवीं और नौवी कक्ष में पढ़ रहे है। इनकी आमदनी प्रतिदिन 400–500 रूपये हो जाती है। अफसाना अब किसी पर आश्रित नहीं है और आत्मनिर्भर हो गयी है।

जीवन में आया उजाला

विभा देवी पटना जिला के बख्तियारपुर प्रखंड अंतर्गत कलादियारा गाँव की रहने वाली है। विभा देवी की कहानी एक प्रेरणादायक सफलता की झलक है, जो सतत् जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से महिलाओं को स्वावलंबी बनने की बानगी दर्शाती है।

विभा देवी के पति की असमय मृत्यु के कारण उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब हो गई थी। इसके बावजूद, वह जीविका समूह से जुड़कर खुद को स्वावलंबी बनाने का निर्णय लिया। समूह की दीदियों की मदद से उन्होंने एक किराना दुकान खोली और उसे सही रूप से संचालित करने के लिए अपना क्षमताबर्धन भी किया।

विभा देवी की दुकान में अब रोजाना 1000 रुपये की बिक्री होती है, जिससे उनकी मासिक आय लगभग 7000 रुपये हो जाती है। वह दुकान में ठंडा पानी, दूध, आइसक्रीम आदि सामग्री की भी बिक्री करती है जिससे उनकी आमदनी और बढ़ रही है। भविष्य में, विभा देवी विभिन्न योजनायों के साथ अभिसरण कर अपने व्यवसाय को और भी विस्तृत करना चाहती हैं। उनका लक्ष्य है कि वह लखपति बनकर अपने सपनों को पूरा करें और अपने परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त बनाए।

इस प्रकार, विभा देवी की सफलता ने सतत् जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से महिलाओं को सशक्तिकरण का मार्ग प्रदान किया है और उन्हें स्वावलंबी बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

किराना दुकान और नास्ता दुकान से बनाई आमदनी का श्रोत

शांति देवी, भोजपुर जिला के डिहरी शिवपुर जगदीशपुर की निवासी हैं। उनके पति बालाजी शाह का कुछ साल पहले निधन हो गया था, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी। उनके चार बच्चे है और उस समय कोई अन्य कमाने वाला सदस्य नहीं था।

शांति देवी की खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत किया गया। उन्हें स्वयं सहायता समूह से भी जोड़ा गया। समूह के दीदियों के सहयोग से उन्होंने एक किराना दुकान खोली, ग्राम संगठन के द्वारा सहायता मिली। सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत उन्हें दुकान के लिए कुल 27,000 रुपये और 10,000 रुपये की परिसंपत्ति हस्तांतरित किया गया। इस दुकान के आमदनी से उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा और उनका पोषण भी सुनिश्चित किया।

शांति देवी ने समूह की बचत के अलावा बैंक में भी 15,000 रुपये की बचत की है। वह अब अपने चार बच्चों के साथ अच्छे से जीवन गुजार रही हैं। शांति देवी कृषि का भी काम करती है और सरकारी योजनाओं के तहत आवास, शौचालय, राशन कार्ड इत्यादि का लाभ भी प्राप्त की है।

शांति देवी का जीवन एक प्रेरणादायक उदाहरण है जो निर्धन महिलायों को आत्मनिर्भर बनने की दिशा दिखा रही हैं। उनकी संघर्षपूर्ण कहानी हमें बताती है कि सहायता और समूह के सहयोग से निर्धन महिलाएँ अपने सपनों को पूरा कर सकती है।

उर्मिला देवी को मिला सतत् जीविकोपार्जन योजना का सहारा

उर्मीला देवी अरवल जिले के बंशी प्रखण्ड के पंचायत सोनभद्र के गाँव बंशी की रहने वाली हैं। दीदी के पति दिल्ली में प्राइवेट कंपनी में काम किया करते थे, परन्तु उसी दौरान कोरोना वायरस का संक्रमण पुरे भारत देश में भी फैलने लगा था। प्रवासी मजदूर घर लौटने लगे थें,उसी समय दीदी के पति भी घर लौट रहे थे परन्तु वह घर नहीं पहुंच पाये और संक्रमण के कारण उनकी मृत्यु ट्रेन में ही हो गयी थी। दीदी अपने तीन बच्चो के साथ बिल्कुल अकेली पड़ गयी। दीदी, अपने बच्चो के भरण–पोषण के लिए दूसरे के खेतो में मजदूरी करने लगी। मजदूरी में इतनी राशि नहीं मिल पाती थी कि वह अपने बच्चो को ठीक से रख सके और उन्हें दो वक्त का संतुलित आहार दे सके।

तब बिहार सरकार की महत्वकांक्षी योजना सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत नरायण जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा उर्मीला देवी को उनके आर्थिक स्थिति को देखते हुए लाभार्थी के रूप में चयन किया गया। उर्मीला देवी को रोजगार करने के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किराना दुकान संचालन हेतु 20000/– रूपये की परिसंपत्ति हस्तांतरित की गयी। वह दुकान को कड़ी मेहनत और लगन से चलाने लगी जिससे उन्हें दुकान से अच्छी कमाई होने लगी। उर्मीला देवी के रोजगार के समुचित देख–रेख एवं सुचारू रूप से संचालन में मास्टर संसाधान सेवी द्वारा भी सहयोग किया गया। उर्मीला देवी ने दुकान की कमाई से बकरी एवं भैंस भी खरीदी है।

अब उर्मीला दीदी की आर्थिक स्थिति सुधरी है तथा उनके बच्चे पढनें भी जाते हैं। उनका परिवार खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा है।

बकरी शेड से बकरी पालन को मिला बढ़ावा

नवादा जिला के अकबरपुर प्रखंड अंतर्गत पैजुना पंचायत के लक्ष्मी बिगहा गाँव में गायत्री देवी निवास करती हैं। वह अनुसूचित जाति से आती हैं। गायत्री देवी की विवाह करीब 20 वर्ष पहले नरहट प्रखंड के राजा विगहा गांव में शंभु राजवंशी से हुई थी। शादी के 2 वर्ष बाद उन्होंने एक बेटा का जन्म दिया। परिवार में खुशी का माहौल था। इस बीच उनके पति कमाने के लिए बाहर चले गए, तब से वह कभी लौटकर घर नहीं आए।

ससुराल में किसी का साथ नहीं मिलने के कारण वह अपने मायके में आकर रहने लगीं। उस समय उनका बेटे की उम्र मात्र 2 साल थी। मायके में उनकी माँ एवं एक भाई है। माँ बूढ़ी हैं एवं भाई मानसिक रुप से बीमार हैं। इसलिए मायके में भी घर चलाने की जिमेदारी गायत्री देवी के उपर ही थी। उन्हें मजदूरी में जो मिलता था, उसी से पुरे परिवार का भरण–पोषण करना पड़ता था। इतने कमाई से 4 सदस्यीय परिवार का भरण–पोषण करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था। घर में खाने–पीने तक की दिक्कत हो जाती थी। वह जैसे–तैसे मजदूरी कर अपने परिवार का भरण – पोषण कर रही थी। जानकारी के अभाव में वह सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं ले पाती थी। सावित्री देवी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ रोजगार करना चाहती थी, पर पूँजी के अभाव में कुछ भी नहीं कर पा रही थी। वह कर्ज लेने का साहस भी नहीं जुटा पाती थी।

वर्ष 2022 में सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत लाभार्थियों के चयन के लिए चलाये गए अभियान के दौरान सामुदायिक संसाधन सेवी (सी॰आर॰पी॰) दीदियों द्वारा गायत्री देवी के परिवार के खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए लाभुक के रुप में चिन्हित किया गया। दुर्गा जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा इन्हें अत्यंत गरीब एवं लक्षित परिवार के रूप में सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत इनका चयन किया गया। इस योजना के तहत जीविकोपार्जन के लिए दीदी ने बकरी पालन का चुनाव किया। योजना के तहत उन्हे 10 हजार रुपये की लागत से 2 बकरी खरीदकर दिया गया। उनके घर मात्र दो कमरे का है। एक कमरा में उनका भाई तथा दूसरे कमरे में उनकी मां एवं वह स्वयं रहती है। ऐसे में उन्हें बकरी पालन में कठिनाई का सामना करना पड़ता था। हर मौसम में दिक्कत होता था। इन समस्याओं से उन्हें निजात दिलाने के लिए मनरेगा द्वारा बकरी शेड का निर्माण करवाया गया है। मनरेगा अंतर्गत बकरी शेड के निर्माण से बकरीपालन एवं संपत्ति निर्माण को बढ़ावा मिला है। पशु शेड बनने के बाद जनवरी 2024 में उन्हें 5 बकरी पुन: मिला है। आज इनके पास बकरियों की संख्या बढ़कर 8 हो गई है। अब बकरियों को ठंढ़, गर्मी और बरसात में होने वाली मौसम की मार से निजात मिली है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार